रामचन्द्र शुक्ल के महत्त्वपूर्ण कथन

1. ग्रियर्सन की पुस्तक ' द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ़ नॉर्दर्न हिन्दुस्तान' को 'बड़ा वृत संग्रह' कहा है।

2. 'शिवसिंह सरोज' व 'इस्त्वार द ला लितरेत्युर ऐन्दुई-ऐ-ऐन्दुस्तानी' रचना को 'वृत संग्रह' मात्र कहा है।

3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'मिश्रबंधु विनोद' पुस्तक को 'बड़ा भारी कवि वृत संग्रह/ प्रकांड कवि वृत्त संग्रह' तथा मिश्र बंधुओं को 'परिश्रमी संकलनकर्ता' कहा है।

4. इन्होनें 'क्रोचे' के 'अभिव्यंजनावाद' एवं 'कुंतक' के 'वक्रोक्तिवाद' का तुलनात्मक विवेचन करके अभिव्यंजनावाद को भारतीय वक्रोक्तिवाद का 'विलायती उत्थान ' कहा है।

5. शुक्ल ने कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी भाषा' कहा।

6. "साधना के क्षेत्र में जो ब्रह्म है साहित्य के क्षेत्र में वही रहस्यवाद है।"

7. आचार्य शुक्ल ने सूफी कवियों की प्रेम पद्धति में 'प्रेम की पीर' को महत्त्वपूर्ण माना है।

8. 'तुलसी' को हिंदी का सर्वश्रेष्ठ कवि सिद्ध किया है।

9. सूरदास को 'जीवनोत्सव का कवि' कहा तथा इसके भ्रमरगीत को 'ध्वनि काव्य" की संज्ञा दी।

10. शुक्ल 'रासपंचाध्यायी' रचना पर नंददास को 'जड़िया कवि' की उपाधि प्रदान की।

11. शुक्ल पद्मावती में रतन सेन द्वारा पद्मावती को प्राप्त करने की इच्छा को प्रेम

Gyansindhu Coaching Classes

न कहकर 'रूप लोभ' की संज्ञा दी।

12. "सूरदास किसी चली आती हुई गीति काव्य परंपरा का चाहे वह मौखिक ही रही हो पूर्ण विकास सा प्रतीत होता है।"

13. "सूरदास की भक्ति का मेरुदंड पुष्टिमार्ग ही है।"

14. "सूर वात्सल्य और वात्सल्य सूर।"

15. आचार्य शुक्ल और डॉ. रामकुमार वर्मा ने विद्यापति को 'शुद्ध श्रृंगारी' कवि माना है।

16. घनानंद को 'लाक्षणिक मूर्तिमत्ता' और 'प्रयोग वैचित्र्य का कवि' तथा 'साक्षात् रस मूर्ति' का कवि कहा है।

17. "हिंदी में लक्षण ग्रंथों की परिपाटी पर रचना करने वाले जो सैकड़ों कवि हुए हैं वह आचार्य कोटि में नहीं आते, वे कवि ही है।"

18. "भाषा के लक्ष्य एवं व्यंजक बल की सीमा कहां तक है इसकी पूरी परख घनानंद को ही थी।"

19. बिहारी के बारे में कहा- "इनके दोहे क्या है रस के छोटे-छोटे छींटे हैं।"

20. शुक्ल ने भूषण की भाषा की आलोचना की है, बोधा को 'रसोन्मत' कवि कहा है।

21. मैथलीशरण गुप्त को 'सांमजस्यवादी कवि' कहा है।

22. श्रीधर पाठक को 'स्वच्छंदतावाद' का प्रवर्तक माना है।

23. सदासुखलाल नियाज को हिंदी गद्य का प्रवर्तक माना है।

24. आचार्य शुक्ल ने छायावाद को 'मधुचर्या' कहा है।

25. आचार्य शुक्ल ने छायावाद को 'अभिव्यंजनावाद का विलायती संस्करण माना है।'

Gyansindhu Coaching Classes

26. पंत को छायावाद का प्रतिनिधि व प्रथम कवि माना है।

28. “इनकी भाषा ललित और सानुप्रास होती थी”- चिंतामणि त्रिपाठी के लिए।

29. “भाषा चलती होने पर भी अनुप्रासयुक्त होती थी”- बेनी के लिए।

30. “इस ग्रंथ को इन्होंने वास्तव में आचार्य के रूप में लिखा है, कवि के रूप में नहीं”- भाषा भूषण ग्रंथ (महाराजा जसवंत सिंह) के लिए।

31. “इसका एक-एक दोहा हिंदी साहित्य में एक-एक रत्न माना जाता है”- बिहारी सतसई के लिए।

32. “इसमें तो रस के ऐसे छींटे पडते हैं जिनसे हृदयकलिका थोड़ी देर के लिए खिल उठती है”- बिहारी सतसई के लिए।

33. “यदि प्रबंध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है”- बिहारी सतसई के लिए।

34. “जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति के साथ भाषा की समाहार शक्ति जितनी अधिक होगी उतनी ही वह मुक्तक की रचना में सफल होगा”- बिहारी के लिए।

35. “बिहारी की भाषा चलती होने पर भी साहित्यिक है।” बिहारी के लिए।

36. “कविता उनकी श्रृँगारी है, पर प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुंचती, नीचे ही रह जाती है”- बिहारी के लिए ।

37. “भाषा इनकी बड़ी स्वाभाविक, चलती और व्यंजना पूर्ण होती थी”- मंडन के लिए।

38. “इनका सच्चा कवि हृदय था”- मतिराम के लिए।

39. “रीतिकाल के प्रतिनिधि कवियों में पद्माकर को छोड़ और किसी कवि में मतिराम की सी चलती भाषा और सरल व्यंजना नहीं मिलती”-मतिराम के

Gyansindhu Coaching Classes

लिए।

40. “उनके प्रति भक्ति और सम्मान की प्रतिष्ठा हिंदू जनता के हृदय में उस समय भी थी और आगे भी बराबर बनी रही या बढ़ती गई”- भूषण के लिए।

41. “भूषण के वीर रस के उद्गार सारी जनता के हृदय की संपत्ति हुए”- भूषण के लिए।

42. “जिसकी रचना को जनता का हृदय स्वीकार करेगा उस कवि की कीर्ति तब तक बराबर बनी रहेगी, जब तक स्वीकृति बनी राहेगी”- भूषण के लिए।

43. “शिवाजी और छत्रसाल की वीरता का वर्णनों को कोई कवियों की झूठी खुशामद नहीं कह सकता”- भूषण के लिए।

44. “वे हिंदू जाति के प्रतिनिधि कवि हैं।”- भूषण के लिए।

45. “छंदशास्त्र पर इनका-सा विशद निरूपण और किसी कवि ने नहीं किया है”- सुखदेव मिश्र के लिए।

46. “ये आचार्य और कवि दोनों रूपों में हमारे सामने आते हैं”- देव के लिए।

47. “कवित्वशक्ति और मौलिकता देव में खूब थी पर उनके सम्यक स्फूर्ण में उनकी रुचि विशेष प्रायः बाधक हुई है”- देव के लिए।

48. “रीतिकाल के कवियों में ये बड़े ही प्रगल्भ और प्रतिभासंपन्न कवि थे, इसमें संदेह नहीं”- देव के लिए।

49. “श्रीपति ने काव्य के सब अंगों का निरूपण विशद रीति से किया है।”

50. “इनकी रचना कलापक्ष में संयत और भावपक्ष में रंजनकारिणी है”- भिखारी दास के लिए।

52. “रीतिकाल की सनक इन में इतनी अधिक थी कि इन्हें यमुना लहरी नामक देव स्तुति में भी नवरस और षट् ऋतु सुझाई पड़ी है”- ग्वाल कवि के

Gyanshu Coaching Classes

लिए।

53. "षट् ऋतुओं का वर्णन इन्होंने विस्तृत किया है पर वही श्रृंगारी उद्दीपन के ढंग का"- ग्वाल कवि के लिए।

54. "ग्वाल कवि ने देशाटन अच्छा किया था और उन्हें भिन्न-भिन्न प्रांतों की बोलियों का अच्छा ज्ञान हो गया था।"

55. अब तक पाई गई पुस्तको में यह 'भाषा योगवासशिष्ठ' ही सबसे पुराना है, जिसमें गद्य अपने परिष्कृत रूप में दिखाई पड़ता है।"

56. "भाषा योगवासिष्ठ को परिमार्जित गद्य की प्रथम पुस्तक और रामप्रसाद निरंजनी को प्रथम प्रौढ़ गद्य लेखक मान सकते हैं।"

57. "जिस प्रकार वे अपनी अरबी-फारसी मिली हिंदी को ही उर्दू कहते थे, उसी प्रकार संस्कृत मिली हिंदी को भाखा"- इंशा अल्ला ख़ाँ के लिए।

58. "अभी हिंदी में कविता हुई कहाँ, सूर, तुलसी, बिहारी आदि ने जिसमें कविता की है, वह तो भाखा है, हिंदी नहीं"- बाबू अयोध्याप्रसाद खत्री का कथन।

59. "आरंभिक काल के चारों लेखकों में इंशा की भाषा सबसे चटकीली, मटकीली, मुहावरेदार और चलती है।"

60. "असली हिंदी का नमूना लेकर उस समय राजा लक्ष्मणसिंह ही आगे बढ़े।"

61. "इससे भी बड़ा काम उन्होंने यह किया कि साहित्य को नवीन मार्ग दिखाया और वे उसे शिक्षित जनता के सहचर्य में ले आए"- भारतेंदु हरिश्चंद्र के लिए।

62. "प्रेमघन में पुरानी परंपरा का निर्वाह अधिक दिखाई पड़ता है"- यहां पुरानी परंपरा से मतलब भाषा से हैं।

63. "विलक्षण बात यह है कि आधुनिक गद्य साहित्य की परंपरा का प्रवर्तन नाटकों से हुआ।"

Gyansindhu Coaching Classes

64. “अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास पहले-पहले हिंदी में लाला श्रीनिवास दास का परीक्षा गुरु निकला था।”

65. भारतेंदु हरिश्चंद्र की भाषा को “हरिश्चंद्री हिंदी” कहा है- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने।

66. शुक्ल ने भारतेंदु के नाटक “सत्य हरिश्चंद्र” को बांग्ला से अनुदित नाटक माना है।

67. “वे सिद्ध वाणी के अत्यंत सरल हृदय कवि थे।”- भारतेंदु हरिश्चंद्र के लिए।

68. “अपनी सर्वतोन्मुखी प्रतिभा के बल से एक ओर तो वे पद्माकर, द्विजदेव की परंपरा में दिखाई पड़ते थे, दूसरी ओर बंग देश के मायकेल एवं हेमचंद्र की श्रेणी में”- भारतेंदु हरिश्चंद्र के लिए।

69. “प्राचीन और नवीन का ही सुंदर सामंजस्य भारतेंदु की कला का विशेष माधुर्य है।”

70. “श्रीयुत्पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने पहले पहल विस्तृत आलोचना का रास्ता निकाला।”

71. “आलस्य का जैसा त्याग उपन्यासकारों में देखा गया है वैसा और किसी वर्ग के हिंदी लेखकों में नहीं।”

72. “पहले मौलिक उपन्यास लेखक जिनके उपन्यासों की सर्वसाधारण में धूम हुई काशी के बाबू देवकीनंदन खत्री थे।”

73. “ये वास्तव में घटना-प्रधान कथानक या किस्से हैं जिनमें जीवन के विविध पक्षों के चित्रण का कोई प्रयत्न नहीं, इससे ये साहित्य कोटि में नहीं आते हैं।”- देवकीनंदन खत्री के उपन्यासों के लिए।

74. “उन्होंने साहित्यिक हिंदी न लिखकर हिंदुस्तानी लिखी जो केवल इसी

Gyansindhu Coaching Classes

प्रकार की हल्की रचनाओं में काम दे सकती है।"- देवकीनंदन खत्री के लिए।

75. "उपन्यासों का ढेर लगा देने वाले दूसरे मौलिक उपन्यासकार पंडित किशोरीलाल गोस्वामी हैं, जिनकी रचनाएं साहित्य कोटि में आती है।"

76. "साहित्य की दृष्टि से उन्हें हिंदी का पहला उपन्यासकार कहना चाहिए।"- पंडित किशोरीलाल गोस्वामी के लिए।

77. "यदि इंदुमति किसी बंगला कहानी की छाया नहीं है तो हिंदी की यही पहली मौलिक कहानी ठहरती है। इसके उपरांत ग्यारह वर्ष का समय, फिर दुलाईवाली का नंबर आता है।"

78. "यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।"

79. "भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में ही सबसे अधिक संभव होता है।"

80. आचार्य शुक्ल ने 'उसने कहा था' कहानी को अद्वितीय कहानी माना है।

81. "इसके पक्के यथार्थवाद के बीच, सुरुचि की चरम मर्यादा के भीतर, भावुकता का चरम उत्कर्ष अत्यंत निपुणता के साथ संपुटित है। घटना इसकी ऐसी है जैसे बराबर हुआ करती है, पर उसमें भीतर से प्रेम का एक स्वर्गीय स्वरूप झांक रहा है- केवल झांक रहा है। निर्लज्जता के साथ पुकार या कराह नहीं रहा है।"- उसने कहा था कहानी के लिए।

82. "इसकी घटनाएं ही बोल रही है, पात्रों के बोलने की अपेक्षा नहीं"- उसने कहा था कहानी के लिए।

83. आचार्य शुक्ल ने महावीर प्रसाद दिवेदी के लेखों को "बातों के संग्रह" कहा है।

84. "दिवेदी जी के लेखों को पढ़ने से ऐसा जान पड़ता है कि लेखक बहुत मोटी अक्ल के पाठकों के लिए लिख रहा है।"

Gyansindhu Coaching Classes

85. “पंडित गोविंदनारायण मिश्र के गद्य को समास अनुप्रास में गुँथे शब्दगुच्छों का एक अटाला समझिए।”

86. “उनके अधिकांश लेख भाषण मात्र है, स्थाई विषयों पर लिखे हुए निबंध नहीं।”- पंडित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी के लिए।

87. “यह बेधड़क कहा जा सकता है कि शैली कि जो विशिष्टता और अर्थ गर्भित वक्रता गुलेरी जी में मिलती है और किसी लेखक में नहीं।”

88. “समालोचना के दो प्रधान वर्ग होते हैं- निर्णयात्मक और व्याख्यात्मक।”

89. “इन पुस्तकों को एक मुहल्ले में फैली बातों से दूसरे मुहल्ले वालों को कुछ परिचित कराने के प्रयत्न के रूप में समझना चाहिए, स्वतंत्र समालोचना के रूप में नहीं।”- महावीर प्रसाद द्विवेदी की आलोचनात्मक पुस्तको के लिए।

90. यद्यपि द्विवेदी जी ने हिंदी के बड़े-बड़े कवियों को लेकर गंभीर साहित्य समीक्षा का स्थाई साहित्य नहीं प्रस्तुत किया पर नई निकली पुस्तकों की भाषा आदि की खरी आलोचना करके हिंदी साहित्य का बडा भारी उपकार किया। यदि द्विवेदीजी ना उठ खड़े होते तो जैसी अव्यवस्थित व्याकरण विरुद्ध और उटपटांग भाषा चारों ओर दिखाई पड़ती थी, उसकी परंपरा जल्दी ना रुकती। उसके प्रभाव से लेखक सावधान हो गए और जिनमें भाषा की समझ और योग्यता थी उन्होंने अपना सुधार किया।”

91. “प्रसाद जी ने अपना क्षेत्र प्राचीन हिंदू काल के भीतर चुना और प्रेमी जी ने मुस्लिम काल के भीतर। प्रसाद के नाटकों में स्कंदगुप्त श्रेष्ठ है और प्रेमी के नाटकों में रक्षाबंधन।”

92. “केवल प्रो नगेंद्र की सुमित्रानंदन पंत पुस्तक ही ठिकाने की मिली”- छायावाद की आलोचना के संबंध में।

Gyanshubhu Coaching Classes

93. “काव्य अधिकतर भावव्यंजनात्मक और वर्णनात्मक है”- अयोध्यासिंह उपाध्याय के लिए।

94. “गुप्त जी वास्तव में सामंजस्यवादी कवि है; प्रतिक्रिया का प्रदर्शन करने वाले अथवा मद में झूमाने वाले कवि नहीं है। सब प्रकार की उच्चता से प्रभावित होने वाला हृदय उन्हें प्राप्त है। प्राचीन के प्रति पूज्य भाव और नवीन के प्रति उत्साह दोनों इनमें है।”- मैथिली शरण गुप्त के लिए।

95. “छायावाद का सामान्यतः अर्थ हुआ प्रस्तुत के स्थान पर उसकी व्यंजना करने वाली छाया के रूप में अप्रस्तुत का कथन।”

96. “छायावाद का केवल पहला अर्थात मूल अर्थ लिखकर तो हिंदी काव्यक्षेत्र में चलने वाली श्री महादेवी वर्मा ही है।”

97. “उनका जीवन क्या था; जीवन की विषमता का एक छाँटा हुआ दृष्टांत था।”- पंडित सत्यनारायण कविरत्न के लिए।

98. “उसका प्रधान लक्ष्य काव्यशैली की ओर था, वस्तु विधान की ओर नहीं। अर्थभूमि या वस्तुभूमि का तो उसके भीतर बहुत संकोच हो गया।”- छायावाद के लिए।

99. “हिंदी कविता की नई धारा का प्रवर्तक इन्हीं को- विशेषतः श्री मैथिलीशरण गुप्त और श्री मुकुटधर पांडेय को समझना चाहिए।”- छायावाद के लिए।

100. “असीम और अज्ञात प्रियतम की प्रति अत्यंत चित्रमय भाषा में अनेक प्रकार के प्रेमोद्गारों तक ही काव्य की गतिविधि प्रायः बंध गई।”- छायावाद के लिए।

101. “छायावाद शब्द का प्रयोग रहस्यवाद तक ही ना रहकर काव्यशैली के

Gyansindhu Coaching Classes

संबंध में भी प्रतीकवाद (सिंबालिज्म) के अर्थ में होने लगा।"

102. आचार्य शुक्ल ने "छायावाद को चित्रभाषा या अभिव्यंजन पद्धति कहा है।

103. "छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में समझना चाहिए। एक तो रहस्यवाद के अर्थ में, जहां उसका संबंध काव्य वस्तु से होता है अर्थात जहां कवि उस अनंत और अज्ञात प्रियतम को आलंबन बनाकर अत्यंत चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार से व्यंजना करता है। छायावाद शब्द का दूसरा प्रयोग काव्यशैली या पद्धती विशेष की व्यापक अर्थ में हैं।

104. "पंत, प्रसाद, निराला इत्यादि और सब कवि प्रतीकपद्धति या चित्रभाषा शैली की दृष्टि से ही छायावादी कहलाए।"

105. "अन्योक्तिपद्धति का अवलंबन भी छायावाद का एक विशेष लक्षण हुआ।"

106. "छायावाद का चलन द्विवेदी काल की रूखी इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ था।"

107. "लाक्षणिक और व्यंजनात्मक पद्धति का प्रगल्भ और प्रचुर विकास छायावाद की काव्यशैली की असली विशेषता है।"

108. "छायावाद की प्रवृत्ति अधिकतर प्रेमगीतात्मक है।"

109. आचार्य शुक्ल ने जयशंकर प्रसाद की कृति 'आंसू' को 'श्रृंगारी विप्रलंभ' कहा है।

110. ज्ञानाश्रयी शाखा और प्रेमाश्रयी शाखा नामकरण आचार्य रामचंद्र शुक्ल की देन है।

111. "यद्यपि यह छोटा है पर इसकी रचना बहुत सरस और हृदयग्राहिणी है और कवि की भावुकता का परिचय देती है,"- सुदामा चरित (नरोत्तमदास) के लिए।

112. "वात्सल्य के क्षेत्र में जितना अधिक उद्घाटन सूर ने अपनी बंद आंखों से

Gyansindhu Coaching Classes

किया, इतना किसी और कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का तो वे कोना-कोना झांक आए।" सूरदास के लिए।

113. रामचन्द्र शुक्ल ने भूषण को हिन्दू जाति का प्रतिनिधि कवि कहा है, छत्रशाल और शिवाजी की वीरतापूर्ण रचनाओं के कारण।

114. आचार्य शुक्ल में घनानंद को साक्षात रस मूर्ति कहा है।

115. "प्रेम मार्ग का ऐसा प्रवीण और वीर पथिक तथा जंबादानी का दावा रखने वाला ब्रजभाषा का दूसरा कवि नहीं हुआ।"- घनानंद के लिए।

116. "भाषा के लक्षक एवं व्यंजक बल की सीमा कहां तक है इसकी पूरी परख इन्हीं को थी।"- घनानंद के लिए।

117. "रीतिकाल के कवियों में यह बड़े ही प्रतिभा संपन्न कवि थे।"- देव के लिए।

118. आचार्य शुक्ल के अनुसार बोधा एक रसिक कवि थे।

119. हिंदी रीति ग्रंथों की अखंड परंपरा एवं रीति काल का आरंभ आचार्य शुक्ल चिंतामणि से मानते हैं।

120. केशव को "कठिन काव्य का प्रेत" शुक्ल ने उनकी क्लिष्टता के कारण कहा है।

121. शुक्ल ने प्रथम आचार्य चिंतामणि को माना है।

122. रीतिकाल नामकरण आचार्य शुक्ल का दिया हुआ है। उन्होंने मध्यकाल के दूसरे भाग को रीतिकाल कहा है।

123. आचार्य शुक्ल ने प्रताप नारायण मिश्र और बालकृष्ण भट्ट की तुलना एडिशन और स्टील से की है।

124. "आलोचना का कार्य है, किसी साहित्यिक रचना की अच्छी तरह परीक्षा करके उसके रूप, गुण और अर्थव्यवस्था का निर्धारण करना"-आचार्य शुक्ल।

Gyansindhu Coaching Classes

125. भाषा, साहित्य और समाज को एक साथ रखकर मूल्यांकन करने वाले आलोचक माने जाते हैं- आचार्य शुक्ल और रामविलास शर्मा।

126. चिंतामणि और रसमीमांसा शुक्ल के सैद्धांतिक आलोचना ग्रंथ है।

127. कविता क्या है?, काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था, रसात्मक बोध के विविध रूप, काव्य में प्राकृतिक दृश्य, भारतेंदु हरिश्चंद्र, तुलसी का भक्ति मार्ग, मानस की धर्मभूमि, काव्य में रहस्यवाद आदि शुक्ल के अनमोल रत्न माने जाते हैं।

128. शुक्ल का प्रथम निबंध "साहित्य" है जो 1904 ईस्वी में सरस्वती में प्रकाशित हुआ था।

129. आचार्य शुक्ल मनोवैज्ञानिक आलोचना के जनक माने जाते हैं।

130. शुक्ल विचारात्मक निबंधों को ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं।

131. हिंदी आलोचना को साहित्यिक रूप आचार्य शुक्ल ने प्रदान किया।

132. "हिंदी के पुराने कवियों को समालोचना के लिए सामने लाकर मिश्र बंधुओं ने बेशक बड़ा जरूरी काम किया, उनकी बातें समालोचना कही जा सकती है या नहीं, यह दूसरी बात है।"- आचार्य शुक्ल

133. आचार्य शुक्ल रसवादी आलोचक माने जाते हैं।

134. शुक्ल "रस को हृदय की मुक्तावस्था" मानते हैं।

135. "जिस प्रकार आत्मा की मुक्त अवस्था ज्ञान दसा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्त अवस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती है, उसे कविता कहते हैं,"- आचार्य शुक्ल (कविता क्या है में)

136. "नाद सौंदर्य से कविता की आयु बढ़ती है"- आचार्य शुक्ल

Gyansindhu Coaching Classes

137. आचार्य शुक्ल छायावाद के निंदक माने जाते हैं।

138. जायसी के पद्मावत को हिंदी का श्रेष्ठ प्रबंध काव्य माना है।

139. आचार्य ने भक्ति आंदोलन को पराजित मनोवृति का परिणाम और मुस्लिम राज्य की प्रतिष्ठा की प्रतिक्रिया माना है।

140. आचार्य शुक्ल के अनुसार रीतिकाल को श्रंगारकाल भी कह सकते है।

141. 'कविता क्या है', 'काव्य में लोक मंगल की साधनावस्था', 'साधारणीकरण और व्यक्ति वैचियवाद', आदि निबंध सैद्धांतिक आलोचना के अंतर्गत आते हैं।

142. भारतेंदु हरिश्चंद्र, तुलसी का भक्ति मार्ग, मानस की धर्म भूमि आदि निबंध व्यावहारिक आलोचना के अंतर्गत आते हैं।

143. हिन्दी की सैद्धांतिक आलोचना को परिचय और सामान्य विवेचन के धरातल से ऊपर उठाकर गंभीर स्वरूप प्रदान करने का श्रेय शुक्ल जी को ही है।

144. आचार्य शुक्ल के आदर्श कवि तुलसीदास जी है। उन्होंने जितना अधिक महत्त्व उन्हें दिया तथा जैसा सूक्ष्म विश्लेषण इनके काव्य का किया वैसा वे किसी अन्य कवि का नहीं कर पाए।

145. श्यामसुंदर दास ने आत्मकथा में यह स्वीकार करते हुए लिखा भी है कि 'आचार्य शुक्ल ने शब्दसागर बनाया और शब्दसागर ने आचार्य शुक्ल को।'

146. शुक्ल के इतिहास का ढाँचा चिंतन पर आधारित था।

147. शुक्ल जी की मृत्यु पर जैसी शोक कविता निराला ने लिखी है, वैसी आज तक किसी की मृत्यु पर नहीं लिखी गई है।

Gyansindhu Coaching Classes

148. शुक्ल ने पहली बार रसविवेचन को मनोवैज्ञानिक आधार दिया।रस मीमांसा में रस के शास्त्रीय विवेचन की मौलिक व्याख्या प्रस्तुत की।

149. "लोकहृदय में हृदय के लीन होने की दशा का नाम ही रसदशा है।"- शुक्ल

150. सूरदास को शुक्ल ने प्रेम का ;जिसके अंतर्गत पालन एवं रंजन आते है,कवि माना है और तुलसीदास को करुणा का ;जिसके अंतर्गत लोकरक्षा का भाव आता है।

151. तुलसीदास शुक्लजी के आदर्श कवि है।तुलसी को ही केंद्रबिंदु में रखकर शुक्लजी ने अपनी आलोचना के मानदंड निश्चित किये।

152. शुक्लजी के अनुसार रामकथा के भीतर कई स्थल मर्मस्पर्शी है।जिसमें सबसे मर्मस्पर्शी रामवनगमन प्रसंग है।

153. जायसी को रामचन्द्र शुक्ल ने सूफी कवि होते हुए भी भक्तों की कोटि में परिगणित किया है।

154. जायसी और सूफी कवियों की जिस विशेषता ने शुक्लजी को सबसे अधिक प्रभावित किया है,वह है- प्रकृति वर्णन।

155. शुक्लजी श्रीधर पाठक और रामनरेश त्रिपाठी को सही अर्थों में स्वच्छंदतावादी कवि माना है।

156. आचार्य शुक्लजी छायावाद के आध्यात्मिक रहस्यवादी रूप के विरोधी थे।

157. शुक्लजी रहस्यवाद को काव्य के क्षेत्र से बाहर की चीज मानते थे।

158. आचार्य शुक्ल के इतिहास की सबसे बड़ी उपलब्धि है,उनका काल विभाजन।उन्होंने हिन्दी साहित्य के 900 वर्षों के इतिहास को चार सुस्पष्ट कालखंडों में विभाजित किया है। साथ ही इनका नामकरण भी किया है।

Gyansindhu Coaching Classes

159. शुक्ल ने केशव को दया विहीन कवि तक कह दिया था।

160. शुक्लजी ने रीतिमुक्त कवियों को फुटकल कवियों में स्थान दिया था।

161. आचार्य शुक्ल को हिंदी आलोचना का युग पुरूष कहा जाता है।

162. "कविता का उद्देश्य हृदय को लोक-सामान्य की भावभूमि पर पहुंचा देना है।" – आ. शुक्ल

163. 'प्रत्यय बोध, अनुभूति और वेगयुक्त प्रवृत्ति इन तीनों के गूढ संश्लेषण का नाम भाव है।'- आ. शुक्ल

164. आ. शुक्ल ने लिखा है कि भ्रमरगीत का महत्व एक बात से और बढ गया है। भक्तशिरोमणि सूर ने इसमें सगुणोपासना का निरूपण बडे ही मार्मिक ढंग से – हृदय की अनुभूति के आधार पर तर्क पद्धति पर नहीं – किया है।

165. 'भक्ति के लिए ब्रह्म का सगुण होना अनिवार्य हैं।'- शुक्ल

166. शुक्ल ने घनानंद को ब्रजभाषा का मर्मज्ञ कवि बताया है।

167. "तुलसीदास उत्तरी भारत की समग्र जनता के हृदय मंदिर में पूर्ण प्रेम प्रतिष्ठा के साथ विराज रहे हैं।"- आचार्य शुक्ल है

168. "यह एक कवि ही हिंदी को प्रौढ़ साहित्यिक भाषा सिद्ध करने के लिए काफी है।"- तुलसीदास के लिए।

169. हिंदी कविता की प्रौढ़ता के युग का आरंभ आचार्य शुक्ल तुलसीदास से मानते हैं।

170. आचार्य शुक्ल तुलसीदास को स्मार्त वैष्णव मानते हैं।

171. शुक्ल ने पद्मावत की कथा का पूर्वार्द्ध कल्पित और उत्तरार्द्ध ऐतिहासिक माना है।

172. छायावाद को श्रृगारी कविता आचार्य शुक्ल ने कहा है।

Gyansindhu Coaching Classes

173. "इसमें कोई संदेह नहीं कि कबीर ने ठीक मौके पर जनता के उस बड़े भाग को संभाला जो नाथ पंथियों के प्रभाव से प्रेम भाव और भक्ति रस से शुन्य, शुष्क पड़ता जा रहा था।"- आचार्य शुक्ल

174. आचार्य शुक्ल के अनुसार सिद्धों की उद्धृत रचनाओं की भाषा मिश्रित अपभ्रंश या पुरानी हिंदी की काव्य भाषा है।

175. 'हिन्दी समीक्षा और आचार्य शुक्ल' के लेखक नामवर सिंह है।

176. 'शुक्ल जी भारतीय पुनरुत्थान युग की उन परिस्थितयों की उपज थे, जिन्होंने राजनीति में महात्मा गांधी, कविता में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जयशंकर प्रसाद आदि को उत्पन्न किया।' – नामवर सिंह

177. "कथा साहित्य में जो कार्य प्रेमचंद ने किया है, काव्यक्षेत्र में जो कार्य निराला ने किया है; वहीं कार्य आलोचना के क्षेत्र में रामचन्द्र शुक्लजी ने किया है।" रामविलास शर्मा

178. "आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी का गौरव थे समीक्षा क्षेत्र में उनका कोई प्रतिद्वंद्वी ना उनके जीवनकाल में था, ना अब कोई

179. उनके समकक्ष आलोचक है। आचार्य शब्द ऐसे ही कर्त्ता साहित्यकारों के योग्य हैं।"- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन।

180. भारतीय काव्यालोचन शास्त्र का इतना गंभीर और स्वतंत्र विचारक हिंदी में तो दूसरा हुआ ही नहीं, अन्यान्य भारतीय भाषाओं में भी हुआ है या नहीं, ठीक नहीं कह सकते, शायद नहीं हुआ"- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन।

181. आचार्य शुक्ल को "हिंदी साहित्य समीक्षा का बालारुण" कहा है- नंददुलारे वाजपेयी ने।

Gyansindhu Coaching Classes

182. आचार्य शुक्ल को "भवभूति का सम्मानधर्मा आचार्य" कहा है- रामविलास शर्मा ने।

183. "आज तक की हिंदी समीक्षा में शुक्ल जी आधार स्तंभ है,"- डॉ. भगवत स्वरूप मिश्र।

184. इनका हृदय कवि का, मस्तिष्क आलोचक का और जीवन अध्यापक का था।"- आचार्य शुक्ल के लिए।

185. रामचंद्र शुक्ल को हिंदी का एकमात्र आचार्य घोषित किया है- नामवर सिंह ने

186. "हिंदी समीक्षा को शास्त्रीय और वैज्ञानिक भूमि पर प्रतिष्ठित करने में शुक्ल जी ने युग प्रवर्तक का कार्य किया है। उनका यह कार्य हिंदी के इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा।"- नंददुलारे वाजपेयी

187. "प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तावृतियों का संचित प्रतिबिंब होता है।"

188. "जब तक भाषा बोलचाल में थी जब तक वह भाषा या देशभाषा ही कहलाती रही। जब वह भी साहित्य की भाषा हो गई जब उसके लिए अपभ्रंश शब्द का व्यवहार होने लगा।"

189. "नाथपंथियों के जोगियों की भाषा सधुक्कड़ी थी।"

190. "सिद्धों की उद्धृत भाषा देश भाषा मिश्रित अपभ्रंश या पुरानी हिन्दी की काव्य भाषा है।"

191. "कबीर आदि संतों को नाथपंथियों से जिस प्रकार साखी और बानी शब्द मिले, उसी प्रकार साखी और बानी के लिए बहुत कुछ सामग्री और सधुक्कड़ी भाषा थी।"

Gyansindhu Coaching Classes

192. "वीरगीत के रूप में हमें सबसे पुरानी पुस्तक बीसलदेव रासो मिलती है।"

193. "बीसलदेव रासो में काव्य के अर्थ में 'रसायण' शब्द बार बार आया है। अतः हमारी समझ में इसी 'रसायण' शब्द से होते-होते 'रासो' हो गया है।"

194. "बीसलदेव रासो में आए बारह सौ बहोत्तरा का स्पष्ट अर्थ वि. सं. 1212 है ।"

195. "यह घटनात्मक काव्य नहीं है, वर्णनात्मक है।" – (बीसलदेव रासो के लिए)

196. "भाषा की परीक्षा करके देखते हैं तो वह साहित्यिक नहीं है, राजस्थानी है ।" – (बीसलदेव रासो के लिए)

197. "अपभ्रंश के योग से शुद्ध राजस्थानी भाषा का जो साहित्यिक रूप था, वह डिंगल कहलाता था।"

198. "इनकी भाषा ललित व सानुप्रास होती थी।" – (चिंतामणि त्रिपाठी के लिए)

199. "भाषा चलती होने पर भी उनकी भाषा अनुप्रासयुक्त होती थी।" – बेनी के लिए)

200. "इस ग्रंथ को इन्होंने वास्तव में आचार्य के रूप में लिखा है, कवि के रूप में नहीं। -(भाषाभूषण ग्रंथ, महाराजा जसवंतसिंह के लिए)

201. "बिहारी की भाषा चलती होने पर भी साहित्यिक है कविता उनकी श्रृंगारी है, पर प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुँचती, नीचे ही रह जाती है।" -(बिहारी के लिए)

202. "उनके प्रेम भक्ति और सम्मान की प्रतिष्ठा हिन्दू जनता के हृदय में उस समय भी थी और आगे भी बराबर बनी रही या बढती रही।" -(भूषण के लिए)

Gyansindhu Coaching Classes

203."भूषण के वीर रस के उद्गार सारी जनता के हृदय की संपति हुए ।" (भूषण के लिए)

204. "शिवाजी और छत्रशाल की वीरता के वर्णनों को कोई कवियों की झूठी खुशामद नहीं कह सकता।" -(भूषण के लिए)

205. "ये आचार्य और कवि दोनों रूपों में हमारे सामने आते हैं।" – (देव के लिए)

206. "कवित्व शक्ति और मौलिकता देव में खूब थी, पर उनके सम्यक स्फुर्ण में उनकी रुचि विशेष प्रायः बाधक हुई है।" – (कवि देव के लिए)

207."रीतिकाल के कवियों में ये बड़े ही प्रगल्भ और प्रतिभासंपन्न कवि थे, इसमें कोई सन्देह नहीं।" – (कवि देव के लिए)

208. "श्रीपति ने काव्य के सब अंगों का निरूपण विशद रीति से किया है ।"- (श्रीपति के लिए)

209. "इनकी रचना कलापक्ष में संयत और भाव पक्ष में रंजनकारिणी।" (भिखारीदास के लिए)

210. "ऐसा सर्वप्रिय कवि इस काल के भीतर बिहारी को छोड़ कोई दूसरा नहीं हुआ है । इनकी रचना की रमणीयता ही इस सर्वप्रियता का एकमात्र कारण है।" – (पद्माकर के लिए)

211. "हृदय की अनुभूति ही साहित्य में रस और भाव कहलाती है।"

212. "हृदय के प्रभावित होने का नाम ही रसानुभूति है।"

213. "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है।"

Gyansindhu Coaching Classes

214. “हमें अपनी दृष्टि से दूसरे देशों के साहित्य को देखना होगा, दूसरे देशों की दृष्टि से अपने साहित्य को नहीं।” \

215. “प्रेम दूसरों की आँखों से नहीं, अपनी आँखों से देखता है।”

216. “भक्ति धर्म की रसात्मक अनुभूति है।”

217. “साहसपूर्ण आनन्द की उमंग का नाम ही उत्साह है ।”

218. “यदि प्रेम स्वप्न है तो श्रद्धा जागरण है।”

219. “परिचय प्रेम का प्रवर्तक है।”

220.“बैर क्रोध का अचार मुरब्बा है।”

221. “इन कालों की रचनाओं की विशेष प्रवृत्ति के अनुसार ही उनका नामकरण किया गया है।”

222.“हिन्दी साहित्य का आदिकाल संवत् 1050से लेकर संवत् 1375 तक अर्थात महाराज भोज के समय से लेकर हम्मीरदेव के समय के कुछ पीछे तक माना जा सकता है।”

223.“जब तक भाषा बोलचाल में थी तब तक वह ‘भाषा’ या ‘देशभाषा’ ही कहलाती रही, जब वह भी साहित्य की भाषा हो गई तब उसके लिए ‘अपभ्रंश’ शब्द का व्यहार होने लगा।”

224.“सिद्धों की उद्धृत रचनाओं की भाषा ‘देशभाषा’ मिश्रित अपभ्रंश या ‘पुरानी हिन्दी ‘ की काव्य भाषा है।”

225.“सिद्धो में ‘सरह’ सबसे पुराने अर्थात विक्रम संवत् 690 के हैं।”

Gyanindhu Coaching Classes

226.“कबीर आदि संतों को नाथपंथियों से जिस प्रकार ‘साखी’ और ‘बानी’ शब्द मिले उसी प्रकार साखी और बानी के लिए बहुत कुछ सामग्री और ‘सधुक्कड़ी’ भाषा भी।”

227.बीसलदेव रासो के बारे में आचार्य शुक्ल ने कहा है, “भाषा की परीक्षा करके देखते हैं तो वह साहित्यिक नहीं है, राजस्थानी है।”

228.चन्दरबरदाई के बारे में आचार्य शुक्ल ने कहा है, “ये हिन्दी के ‘प्रथम महाकवि’ माने जाते हैं और इनका ‘पृथ्वीराज रासो’ हिन्दी का ‘प्रथम महाकाव्य’ है।”

229.पृथ्वीराज रासो के बारे में आचार्य शुक्ल ने कहा है, “भाषा की कसौटी पर यदि ग्रंथ को कसते हैं तो और भी निराश होना पड़ता है क्योंकि वह बिल्कुल बेठिकाने हैं– उसमें व्याकरण आदि की कोई व्यवस्था नहीं है।”

230.“विद्यापति के पद अधिकतर श्रृंगार के ही है जिनमें नायिका और नायक राधा-कृष्ण है।”

231. आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल बहुत सस्ते हो गए हैं। उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों ने‘गीत गोविंद’ के पदों को आध्यात्मिक संकेत बताया है, वैसे ही विद्यापति के इन पदों को भी। (विद्यापति के सम्बन्ध में)

232.“विद्यापति को कृष्ण भक्तों की परम्परा में न समझना चाहिए।”

233.“मोटे हिसाब से वीरगाथाकाल महाराज हम्मीर की समय तक ही समझना चाहिए।”

234.“कबीर ने अपनी झाड़-फटकार के द्वारा हिंदुओं और मुसलमानों की कट्टरता को दूर करने का जो प्रयास किया। वह अधिकतर चिढ़ाने वाला सिद्ध हुआ, हृदय को स्पर्श करने वाला नहीं।”

Gyansindhu Coaching Classes

235.“इस कहानी के द्वारा कवि ने प्रेममार्ग के त्याग और कष्ट का निरूपण करके साधक के भगवत प्रेम का स्वरूप दिखाया है।” (कुतबन कृत मृगावती के बारे में)

236.आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, मलिक मुहम्मद जायसी के गुरु थे –शेख मोहिदी (मुहीउद्दीन)

237.“प्रेमगाथा की परम्परा में पद्मावत सबसे प्रौढ़ और सरस है।”

238.“यहीं प्रेममार्गी सूफी कवियों की प्रचुरता की समाप्ति समझनी चाहिए।” (शेख नबी के बारे में)

239.“सूफ़ी आख्यान काव्यों की अखंडित परम्परा की यहीं समाप्ति मानी जा सकती है।” (नूर मुहम्मद कृत अनुराग बांसुरी के बारे में)

240. “नूर मुहम्मद को हिन्दी भाषा में कविता करने के कारण जगह-जगह इसका सबूत देना पड़ा है कि वे इस्लाम के पक्के अनुयायी थे।”

241. “इस परम्परा में मुसलमान कवि हुए हैं। केवल एक हिन्दू मिला है।” (आचार्य शुक्ल ने सूरदास की तरफ़ इशारा किया है)

242.“जनता पर चाहे जो प्रभाव पड़ा हो पर उक्त गद्दी के भक्त शिष्यों ने सुन्दर-सुन्दर पदों द्वारा जो मनोहर प्रेम संगीत धारा बहाई उसने मुरझाते हुए हिंदू जीवन को सरस और प्रफुल्लित किया।”–श्री बल्लभाचार्य जी के लिए

243.“सूर की बड़ी भारी विशेषता है नवीन प्रसंगों की उद्भावना।”

244. “ये बड़े भारी कृष्णभक्त और गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के बड़े कृपापात्र शिष्य थे।” (रसखान के बारे में)

245. “इन भक्तों का हमारे साहित्य पर बड़ा भारी उपकार है।” (कृष्णभक्त कवियों के लिए)

Gyansindhu Coaching Classes

246. आचार्य शुक्ल ने केशवदास को भक्ति काल में सम्मिलित किया है।

247.रामचरितमानस को 'लोगों के हृदय का हार' कहा है। (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने)

248. "गोस्वामी जी की भक्ति पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी सर्वांगपूर्णता।"

249. "रामचरितमानस में तुलसी केवल कवि रूप में ही नहीं, उपदेशक के रूप में भी सामने आते हैं।"

250. "प्रेम और श्रृंगार का ऐसा वर्णन जो बिना किसी लज्जा और संकोच के सबके सामने पढ़ा जा सके, गोस्वामी जी का ही है।"

251. "हम निसंकोच कह सकते हैं कि यह एक कवि ही हिन्दी को प्रौढ़ साहित्यिक भाषा सिद्ध करने के लिए काफी है।" (तुलसीदास के लिए)

252.भ्रमरगीत का महत्व एक बात से और बढ़ गया है। भक्तशिरोमणि सूर ने इसमें सगुणोपासना का निरूपण बड़े ही मार्मिक ढंग से हृदय की अनुभूति के आधार पर तर्क पद्धति पर नहीं–किया है।

253.'सूरसागर' में जगह-जगह दृष्टिकूट वाले पद मिलते हैं। यह भी विद्यापति का अनुकरण है।

254. जायसी का विरह-वर्णन हिन्दी साहित्य में एक अद्वितीय वस्तु है। (जायसी ग्रंथावली)

255. प्रबन्ध क्षेत्र में तुलसीदास का जो सर्वोच्च आसन है, उसका कारण यह है कि वीरता, प्रेम आदि जीवन का कोई एक ही पक्ष न लेकर तुलसी ने संपूर्ण जीवन को लिया है। जायसी का क्षेत्र तुलसी की अपेक्षा में परिमित है, पर प्रेम वंदना उनकी अत्यन्त गूढ़ है। (जायसी ग्रंथावली' की भूमिका)

Gyansindhu Coaching Classes

256. यह शील और शील का, स्नेह और स्नेह का तथा नीति और नीति का मिलन है। इस मिलन के संघटित उत्कर्ष की दिव्य प्रभा देखने योग्य, यह झाँकी अपूर्व है। (गोस्वामी तुलसीदास)

257. शुक्ल जी ने तुलसी और जायसी के समकक्ष ही सूरदास को माना है। यदि हम मनुष्य जीवन के संपूर्ण क्षेत्र को लेते हैं तो सूरदास की दृष्टि परिमित दिखाई पड़ती है, पर यदि उनके चुने हुए क्षेत्रों (श्रृंगार तथा वात्सल्य) को लेते हैं, तो उनके भीतर उनकी पहुँच का विस्तार बहुत अधिक पाते हैं। उन क्षेत्रों में इतना अंतर्दृष्टि विस्तार और किसी कवि का नहीं है। (भ्रमरगीत सार की भूमिका)

258. गद्य का आविर्भाव आधुनिक काल की सबसे प्रधान घटना है।

259. संवत् 1860 (1803 ई.) के लगभग हिंदी-गद्य का प्रवर्तन तो हुआ पर उसके साहित्य की अखंड परंपरा उस समय से नहीं चली। साहित्य के योग्य स्वच्छ सुव्यवस्थित भाषा में लिखी कोई पुस्तक संवत् 1941 के पूर्व नहीं मिलती। संवत् 1860 और 1915 के बीच का काल गद्य रचना की दृष्टि से प्रायः शून्य ही मिलता है।

260. गद्य की एक साथ परंपरा चलाने वाले चार लेखकों में आधुनिक हिंदी का पूरा-पूरा आभास मुंशी सदासुखलाल और सदल मिश्र की भाषा में मिलता है। व्यवहारोपयोगी इन्हीं की भाषा ठहरती है। इन दो में मुंशी सदासुख की साधु भाषा अधिक महत्त्व की है। मुंशी सदासुख ने लखनी भी चारों से पहले उठायी, अतः गद्य का प्रवर्तन करनेवालों में उनका विशेष स्थान समझना चाहिये।

Gyansindhu Coaching Classes

261. राजा शिवप्रसाद और भारतेंदु के समय तक हिंदी-उर्दू का झगडा चलता रहा। गार्सा-द-तासी (पेरिस में हिंदुस्तानी या उर्दू के अध्यापक) ने भी फ्रांस में बैठे-बैठे योग दिया।

262.गार्सा–द-तासी ने संवत् 1909 ई. के आसपास हिंदी और उर्दू दोनों का रहना आवश्यक समझा और यह कहा- यद्यपि मैं खुद उर्दू का बड़ा पक्षपाती हूँ लेकिन मेरे विचार से हिंदी को विभाषा या बोली कहना उचित नहीं।

263.गार्सा-द-तासी मजहबी कट्टरपन की प्रेरणा से सैयद अहमद की भरपेट तारीफ करके उर्दू का पक्षग्रहण कर कहते हैं- "इस वक्त हिंदी की हैसियत भी एक बोली (डायलेक्ट) की सी रह गई है जो हर गाँव में अलग-अलग ढंग से बोली जाती है।"

264. उन्होंने (भारतेंदु) जिसप्रकार गद्य की भाषा को परिमार्जित करके उसे बहुत ही चलता मधुर और स्वच्छ रूप दिया, उसी प्रकार हिंदी-साहित्य को भी नये मार्ग पर ला खड़ा किया वह वर्तमान हिंदी गद्य के प्रवर्तक माने गये।

265. मुंशी सदासुख लाल की भाषा साधु होते हुए भी पंडिताऊ लिये थी।

266. लल्लूलाल में ब्रजभाषापन और सदलमिश्र में पूरबीपन था।

267.राजा शिवप्रसाद का उर्दूपन शब्दों तक ही परिमित न था वाक्यविन्यास तक में घुसा था।

268. राजा लक्ष्मणसिंह की भाषा विशुद्ध और मधुर अवश्य थी पर आगरा की बोलचाल का पुट उसमें कम न था।

269. भाषा का निखरा हुआ सामान्य रूप भारतेंदु की कला के साथ प्रकट हुआ।

Gyansindhu Coaching Classes

270.भारतेन्दु ने पद्य की ब्रजभाषा का बहुत संस्कार किया। पुराने पड़े हुए शब्दों को हटाकर काव्यभाषा में भी वे बहुत कुछ चलतापन और सफाई लाये। इससे भी बड़ा काम उन्होंने यह किया कि साहित्य को नवीन मार्ग दिखाया और वे उसे शिक्षित जनता के साहचर्य में लाये।

271. जब भारतेन्दु अपनी मँजी हुई परिष्कृत भाषा सामने लाये तब हिंदी बोलने वाली जनता को गद्य के लिए खड़ीबोली का प्रकृत साहित्यिक रूप मिल गया और भाषा के स्वरूप का प्रश्न नहीं रह गया। प्रस्तावकाल समाप्त हुआ और भाषा का स्वरूप स्थिर हुआ।

272.भारतेन्दु में हम दो प्रकार की शैलियों का व्यवहार पाते हैं। उनकी भावावेश की शैली दूसरी है और तथ्य निरूपण की दूसरी।

273.प्रतापनारायण मिश्र की प्रकृति विनोदशील थी। अतः, उनकी भाषा बहुत स्वच्छंद गति से बोलचाल की चपलता और भावभंगिमा लिये चलती है। हास्य-विनोद की उमंग में वह कभी-कभी मर्यादा का अतिक्रमण करती, पूरबी कहावतों और मुहावरों की बौछार भी छोड़ती चली है।

274.प्रेमघन के लेखों में गद्य काव्य के पुराने ढंग की झलक, रंगीन इमारत की चमक दमक बहुत कुछ मिलती है। बहुत से वाक्यखंडों की लड़िया से गुंथे हुए उनके वाक्य अत्यन्त लंबे होते थे-इतने लम्बे की उनका अन्वय कठिन होता था।

275.पदविन्यास में तथा कहीं-कहीं वाक्यों के बीच विरामस्थलों पर भी अनुप्रास देख इंशा और लल्लूलाल का स्मरण होता है। इस दृष्टि से देखें तो प्रेमघन में पुरानी परंपरा का निर्वाह अधिक दिखाई पड़ता है।

Gyansindhu Coaching Classes

276.बालकृष्ण भट्ट की भाषा अधिकतर वैसी ही होती थी जैसी खरी-खरी सुनाने के काम में लायी जाती है। जिन लेखों में उनकी चिड़चिड़ाहट झलकती है वे विशेष मनोरंजक हैं। भाषा उनकी चटपटी, तीखी और चमत्कारपूर्ण होती थी।

277.ठाकुर जगमोहन की शैली शब्द शोधन और अनुप्रास की प्रवृत्ति के कारण चौधरी बदरीनारायण की शैली से मिलती-जुलती है। उनकी भाषा में जीवन की मधुर भारतीय रंगस्थलियों की मार्मिक ढंग से हृदय में जमाने वाले प्यारे शब्दों का चयन अपनी अलग विशेषता रखता है।

278.अंग्रेजी ढंग का मौलिक उपन्यास पहले पहले हिंदी में लाला श्रीनिवासदास का परीक्षा गुरु निकला था। उसके पीछे राधाकृष्णदास ने निस्सहाय हिंदू और बालकृष्ण भट्ट ने नूतन ब्रह्मचारी तथा 'सौ अजान एक सुजान, नामक छोटे-छोटे उपन्यास लिखे।

279.हरिश्चंद्र ने बंगभाषा के एक उपन्यास के अनुवाद में हाथ लगाया था पर पूरा न कर सके थे।

280. बाबू गजाधर सिंह ने बंगविजेता और दुर्गेशनंदिनी का अनुवाद किया। संस्कृत की कादम्बरी की कथा भी उन्होंने बंगला के आधार पर लिखी।

281. राधाकृष्णदास, कार्तिक प्रसाद खत्री, रामकृष्ण वर्मा आदि ने बंगला के उपन्यासों के अनुवाद की जो परंपरा चलायी, वह बहुत दिनों तक चलती रही।

282.पहले मौलिक उपन्यास लेखक. जिनके उपन्यासों की सर्वसाधारण में धूम रही काशी के बाबू देवकीनंदन खत्री थे।

Gyansindhu Coaching Classes

283..... इनके उपन्यासों का लक्ष्य केवल घटना वैचित्र्य रहा, रससंचार, भावविभूति या चरित्र चित्रण नहीं। ये वास्तव में घटना प्रधान कथानक या किस्से हैं. जिनमें जीवन के विविध पक्षों के चित्रण का कोई प्रयत्न नहीं, इसलिए ये साहित्य की कोटि में नहीं आते। (देवकीनंदन खत्री के उपन्यासों के संबंध में)

284. देवकीनंदन खत्री ने राजा शिव प्रसाद वाली उस पिछली आमफ़हम भाषा का बिल्कुल अनुसरण किया जो एकदम उर्दू की ओर झुक गई थी, ठीक नहीं।... उन्होंने साहित्यिक हिंदी न लिखकर 'हिंदुस्तानी' लिखी।

285. उपन्यासों का ढेर लगा देने वाले दूसरे मौलिक उपन्यासकार पं किशोरीलाल । गोस्वामी है, जिनकी रचनाएं साहित्य कोटि में आती हैं।

286. ..... संवत् 1955 में उन्होंने उपन्यास मासिक पत्र निकाला और द्वितीय उत्थानकाल के भीतर 65 छोटे-बड़े उपन्यास लिखकर प्रकाशित किये अतः साहित्य की दृष्टि से इन्हें हिंदी का पहला उपन्यासकार कहना चाहिये। (पंडित किशोरी लाल गोस्वामी के संबंध में)

287.किशोरीलाल गोस्वामी के बहुत से उपन्यासों (यथा-चपला) का प्रभाव नवयुवकों पर बुरा पड़ सकता है। उनमें उच्च वासनायें व्यक्त करने वाले दृश्यों की अपेक्षा निम्नकोटि की वासनाएँ प्रकाशित करनेवाले दृश्य अधिक भी हैं और चटकीले भी।

288. एक बात और खटकती है। वह है उनका भाषा के साथ मजाक। कुछ दिन पीछे किशोरीलाल गोस्वामी को उर्दू लिखने का शौक हुआ। उर्दू भी ऐसी-वैसी नहीं, उर्दू-ए-मु-अल्ला। इस शौक कुछ आगे-पीछे उन्होंने राजा शिवप्रसाद का जीवन चरित्र लिखा, जो सरस्वती के आरंभ के 3 अंकों (भाग 1,

Gyansindhu Coaching Classes

संख्या-2, 3. 4) में निकला। उर्दू जबान और शेर सखुन की बेंढगी नकल से उनके बहुत से उपन्यासों का साहित्यिक गौरव घट गया।

289. प्रसिद्ध कवि और गद्य लेखक हरिऔध के दो उपन्यास 'ठेठ हिंदी का ठाट और 'अधखिला फूल' भाषा के नमूने की दृष्टि से लिखी गई हैं, औपन्यासिक कौशल की दृष्टि से नहीं।

290. उनकी सबसे पहली लिखी पुस्तक 'वेनिस का बाँका' में जैसे भाषा संस्कृतपन की सीमा पर पहुँची हुई थी वैसे ही इन दोनों में ठेठपन की हद दिखाई देती हैं। (अयोध्यासिंह उपाध्याय की रचनाओं के संबंध में)

291. लज्जाराम मेहता अखबारनबीसी के बीच-बीच में पुरानी हिंदू-मर्यादा. हिंदू धर्म और हिंदू पारिवारिक व्यवस्था की सुंदरता और समीचीनता दिखाने के लिए छोटे-बड़े उपन्यास भी लिखे। पर ये दोनों महाशय वास्तव में उपन्यासकार नहीं। उपाध्याय जी कवि है और मेहता जी पुराने अखबारनवीस।"

292.काव्यकोटि में आनेवाले भावप्रधान उपन्यास जिनमें भावों या मनोविकार की प्रगल्भ और वेगवती व्यंजना का लक्ष्य प्रधान हो (चरित्र-चित्रण या घटना वैचित्र्य का लक्ष्य नहीं) हिंदी में न देख ब्रजभाषा में काफी देख बाबू ब्रजनदन सहाय ने दो उपन्यास इस ढग के प्रस्तुत किये-1 सौंदर्योपासक 2 राधाकांत

293.बाबू रामकृष्ण वर्मा ने .....चित्तौर चातकी (1952) का बंगभाषा से अनुवाद किया। 'चित्तौर चातकी' चित्तौड़ के राजवंश की मर्यादा के विरुद्ध समझी गई और इसका इतना विरोध हुआ कि सब कॉपियाँ गंगा में फेंक दी गई।

Gyansindhu Coaching Classes

294. बाबू गोपालराम (गहमर) बंग भाषा के गार्हस्थ उपन्यासों के अनुवाद में तत्पर मिलते हैं। भाषा इनकी चटपटी और वक्रतापूर्ण हैं। ये गुण लाने के लिए कहीं-कहीं उन्होंने पूरबी शब्दों एवं मुहावरों का बेधड़क प्रयोग किया है। उनके लिखने का ढंग बहुत मनोरंजक है।

295. यदि इंदुमती किसी बंगला कहानी की छाया नहीं है तो यह हिंदी की पहली मौलिक कहानी ठहरती है। इसके उपरांत ग्यारह वर्ष का समय फिर दुलाईवाली का नंबर आता है।

296. बंगभाषा से अनुवाद करनेवालों में इंडियन प्रेस के मैनेजर गिरिजाकुमार घोष हिंदी कहानियों में अपना नाम पार्वतीनंदन देते थे।

297.सरस्वती में प्रकाशित कुछ मौलिक कहानियों हैं-1. इंदुमती (1900 ई. पृ. 337 किशोरी लाल गोस्वामी), 2. गुलबहार (1902 ई. किशोरीलाल गोस्वामी). 3, प्लेग की चुडैल (1902 ई. मास्टर भगवानदास मिरजापुर), 4. ग्यारह वर्ष का समय (1903 ई. रामचंद्र शुक्ल), 5 पंडित और पंडितानी (1903 ई. गिरिजादत्त वाजपेयी), 6. दुलाईवाली (1904, बंगमहिला)।

298. सूर्यपुरा के राजा राधिका रमणप्रसाद सिंह जी हिंदी के एक अत्यन्त भावुक और भाषा की शक्तियों पर अद्भुत अधिकार रखनेवाले पुराने लेखक हैं।

299. गुलेरी की अद्वितीय कहानी 'उसने कहा था' (1915, सरस्वती में प्रकाशित) में पक्के यथार्थवाद के बीच, सुरुचि की चरम मर्यादा के भीतर, भावुकता का चरम उत्कर्ष अत्यन्त निपुणता के साथ संपुटित है। प्रेम का एक स्वर्गीय स्वरूप झांक रहा है। कहीं भी प्रेमी की निर्लज्जता, प्रगत्मता वेदना की

Gyanshu Coaching Classes

बीभत्स विवृत्ति नहीं है। इसकी घटनाएँ ही बोल रही है, पात्रों के बोलने की अपेक्षा नहीं।

300. रामचंद्र शुक्ल जी ने विविध प्रणालियों पर लिखी गई कहानियों का विवरण दिया है- सादे ढंग से केवल कुछ अत्यन्त व्यंजक घटनाएँ और थोडी बातचीत लाकर क्षिप्र गति से किसी एक गभीर संवेदना या मनोभाव में पर्यवसित होनेवाली कहानी। यथा-उसने कहा था (गुलेरी), निंदिया लागी और पेंसिल स्केच (भगवती प्रसाद वाजपेयी)।

301. परिस्थितियों के अंतर्गत प्रकृति चित्रण, परिस्थितियों के विशद् मार्मिक, कभी-कभी रमणीय, अलंकृत वर्णनों और व्याख्यानों के साथ किसी मार्मिक परिस्थिति में पर्यवसित होनेवाली कहानी। जैसे-चंडीप्रसाद हृदयेश की उन्मादिनी और शांति निकेतन कहानी।

302.घटना और संवाद दोनों में गूढ व्यंजना एवं रमणीय कल्पना का सुंदर समन्वय यथा- प्रसाद जी और रायकृष्णदास की कहानियों।

303. किसी तथ्य का प्रतीक खडा करनेवाली लाक्षणिक कहानी। यथा- पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र का भुनगा।

304. भिन्न-भिन्न वर्गों के संस्कार का स्वरूप सामने रखनेवाली कहानी। जैसे-शतरंज के खिलाड़ी (प्रेमचंद). दान (ऋषभचरण जैन)

305. किसी मधुर या मार्मिक प्रसंग कल्पना के सहारे किसी ऐतिहासिक कालखंड का खंडचित्र दिखानेवाली कहानी। यथा-गहुला (रायकृष्णदास), आकाशदीप (प्रसाद)।

Gyansindhu Coaching Classes

306. राजनीतिक आंदोलनों में सम्मिलित नवयुवकों के स्वदेश प्रेम त्याग, साहस, जीवनोत्सर्ग का चित्र खडा करनेवाली। जैसे-उसकी माँ (पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र)

307.देश की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था से पीडित जनसमुदाय की दुर्दशा सामने लाने वाली कहानी। यथा- निंदिया लागी (भगवती प्रसाद वाजपेयी) अपना-अपना भाग्य (जैनेन्द्र)।

308. सभ्यता और संस्कृति की किसी व्यवस्था के विकास का आदिम रूप झलकाने वाली। यथा- अंतःपुर का आरंभ (रायकृष्णदास), चंबेली की कली (श्रीमत् समंत), बाहुबलि (जैनेन्द्र कुमार) ।

309. समाज के पाखंडपूर्ण पापाचार के चटकीले चित्र सामने लानेवाली कहानियाँ, जैसे-उग्र की कहानियाँ।

310. उग्र की भाषा बड़ी अनूठी चपलता और आकर्षक वैचित्र्य के साथ चलती है उस ढंग की भाषा उन्ही के उपन्यासों और चाँदनी ऐसी कहानियों में मिल सकती है।

311. विलक्षण बात है कि आधुनिक गद्य-साहित्य की परंपरा का प्रवर्त्तन नाटकों से हुआ। भारतेंदु से पहले नाटक के नाम से जो दो चार ब्रजभाषा में लिखे गए थे उनमें महाराज विश्वनाथ सिंह के आनंद रघुनंदन नाटक को छोड़कर और किसी में नाटकत्व न था।

312. भारतेंदु, प्रतापनारायण मिश्र. बदरीनारायण चौधरी उद्योग करके अभिनय का प्रबंध किया करते थे और कभी-कभी स्वयं भी पार्ट लेतें थे।

313. पं शीतलाप्रसाद त्रिपाठी कृत 'जानकीमंगल' नाटक का जो धूमधाम से अभिनय हुआ तथा उसमें भारतेंदु ने पार्ट किया था यह अभिनय देखने के

Gyansindhu Coaching Classes

लिए काशी नरेश महाराजा ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह भी पधारे थे और इसका विवरण 8 मई, 1868 के इंडियन मेल में प्रकाशित हुआ था ।

314. प्रतापनारायण मिश्र का अपने पिता से अभिनय के लिए मूँछ मुडाने की आज्ञा माँगना प्रसिद्ध ही है।

315. संवत् 1925 में भारतेंदु ने 'विद्यासुंदर' नाटक बंगला से अनुवाद करके प्रकाशित किया। इस अनुवाद में ही उन्होंने हिंदी गद्य के बड़े सुडौल रूप का आभास दिया।

316. संवत् 1930 में भारतेन्दु ने हरिश्चंद्र मैगजीन नाम की एक मासिक पत्रिका निकाली थी जिसका नाम 8 संख्याओं के उपरांत हरिश्चंद्र चंद्रिका हो गया। हिंदी गद्य का ठीक परिष्कृत रूप पहले -पहल इसी चंद्रिका में प्रकट हुआ। जिस प्यारी हिंदी को देश ने अपनी विभूति समझा, जिसको जनता ने उत्कंठापूर्वक दौड़कर अपनाया, उसका दर्शन इसी पत्रिका में हुआ। भारतेंदु ने नयी सुधरी हुई हिंदी का उदय इसी समय से माना है।

317. उन्होंने 'कालचक्र' नामक अपनी पुस्तक में नोट किया है कि हिंदी नई चाल में ढली, 1973 ई. (भारतेंदु हरिश्चंद्र के संबंध में)

318. भारतेंदु हरिश्चंद्र की भाषा को हरिश्चंद्री हिंदी रामचंद्र शुक्ल ने कहा है।

319. सं. 1930 (1873 ई.) में भारतेंदु ने अपना पहला मौलिक नाटक 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' नाम का प्रहसन लिखा जिसमें धर्म और उपासना के नाम से समाज में प्रचलित अनेक अनाचारों का जघन्य रूप दिखाते हुए उन्होंने राजा शिवप्रसाद को लक्ष्य करके खुशामदियों और केवल अपनी मानवृद्धि की फिक्र में रहने वालों पर छींटे छोड़े।

Gyansindhu Coaching Classes

320.गद्य रचना के अंतर्गत भारतेन्दु का ध्यान सर्वप्रथम नाटकों की ओर गया। अपनी 'नाटक' नाम की पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि हिंदी में मौलिक नाटक उनके पहले दो लिखे गये थे- महाराज विश्वनाथ सिंह का 'आनंदरघुनंदन' नाटक और बाबू गोपालचंद्र का 'नहुष' नाटक।

321. प्रतापनारायण मिश्र यद्यपि लेखन कला में भारतेन्दु को ही आदर्श मानत थे परन्तु उनकी शैली में बहुत कुछ विभिन्नता भी लक्षित होती हैं।

322.भारतेंदु सिद्ध वाणी के अत्यन्त सरस हृदय कवि थे। प्राचीन और नवीन का सुंदर सामंजस्य भारतेन्दु की कला का विशेष माधुर्य है।

323.अपने समय के सब लेखकों में भारतेंदु की भाषा साफ-सुथरी और व्यवस्थित होती थी। उसमें शब्दों के रूप भी एक प्रणाली पर मिलते हैं और वाक्य भी सुसम्बद्ध पाये जाते हैं।

324.प्रतापनारायण मिश्र इतने मनमौजी थे कि आधुनिक सभ्यता और शिष्टता की कम परवाह करते थे। कभी लावनी बाजों में जाकर शामिल हो जाते थे कभी मेलों और तमाशों में बंद इक्के पर बैठ जाते दिखाई देते थे।

325.मिश्र के समान भट्ट जी भी स्थान-स्थान पर कहावतों का प्रयोग करते थे पर उनका झुकाव मुहावरों की ओर अधिक रहता था।

326.देशदशा, समाजसुधार, नागरी हिंदी प्रचार, साधारण मनोरंजन इत्यादि । सब विषयों पर प्रतापनाराण मिश्र की लेखनी चलती थी.............यद्यपि उनकी प्रवृत्ति हास्यविनोद की ओर अधिक रहती थी पर जब कभी कुछ गंभीर विषयों पर लिखते थे तब संयत और साधु भाषा का व्यवहार करते थे।

327.प्रतापनारायण मिश्र में विनोदप्रियता विशेष थी इससे उनकी वाणी में वक्रता की मात्रा प्रायः रहती थी। इसके लिए वे पूरबीपन की परवाह न करके

Gyansindhu Coaching Classes

अपने बैसवारे की ग्राम्य कहावतें और शब्द भी बेधड़क रख दिया करते थे। कैसा ही विषय हो पर उसमें विनोद और मनोरंजन की सामग्री ढूँढ लेते थे।

328.पं. प्रतापनारायण मिश्र और बालकृष्ण भट्ट ने हिंदी गद्य-साहित्य में वही काम किया जो अंग्रेजी गद्य-साहित्य में एडीसन और स्टील ने किया था।

329.बालकृष्ण भट्ट को मुहावरों की सूझ बहुत अच्छी थी। आँख, कान, नाक इत्यादि शीर्षक देकर उन्होंने कई लेखो में बड़े ढंग के साथ मुहावरों की झड़ी बांध दी है।

330. व्यंग्य और वक्रता बालकृष्ण भट्ट के लेखों में भी भरी रहती थी और वाक्य भी कुछ बड़े-बड़े होते हैं।

331. ठीक खड़ीबोली के आदर्श का निर्वाह बालकृष्ण भट्ट ने कभी नहीं किया। पूरबी प्रयोग बराबर मिलते हैं। उनके लिखने के ढंग से यह जान पड़ता है कि वे अंग्रेजी पढ़े-लिखे नवशिक्षित लोगों को हिंदी की ओर आकर्षित करने के लिए लिख रहे हैं ।..... इसीप्रकार फारसी-अरबी के लफ्ज ही नही, बड़े-बड़े फिकरे तक भट्ट जी अपनी मौज में आकर रखा करते थे ।

332.बालकृष्ण भट्ट की शैली में एक निरालापन झलकता है। प्रतापनारायण के हास्यविनोद से भट्टजी के हास्यविनोद में यह विशेषता है कि वह कुछ चिड़चिड़ापन लिये रहता था। पदविन्यास भी कभी उसका बहुत ही चोखा और अनूठा होता था।

333.बालकृष्ण भट्ट से सं. 1943 में श्रीनिवासदास के 'संयोगिता स्वयंवर' नाटक की 'सच्ची समालोचना' भी और पत्रों में उसकी प्रशंसा ही प्रशसा देखकर की थी। उसी वर्ष बदरीनारायण चौधरी ने बहुत ही विस्तृत

Gyansindhu Coaching Classes

समालोचना अपनी पत्रिका में निकाली थी। इस दृष्टि से सम्यक समालोचना का हिंदी में सूत्रपात करनेवाले इन्हीं दो लेखकों को समझना चाहिये।

334. उनकी हर एक बात में रईसी टपकती थी। बातचीत का ढंग उनका बहुत ही निराला और अनूठा था। ये भारतेन्दु के घनिष्ठ मित्रों में थे और वेश। भी उन्हीं सा रखते थे।

335. इनकी (प्रेमघन) शैली विलक्षण थी। ये गद्य रचना को एक कला के रूप में ग्रहण करनेवाले कलम की कारीगरी समझनेवाले लेखक थे और कभी-कभी ऐसे पेचीले मजमून बाँधते थे कि पाठक एक-एक डेढ़-डेढ़ कॉलम के लंबे वाक्य में उलझा रहता था।

336. अनुप्रास और अनूठे पदविन्यास की ओर उनका (प्रेमघन) ध्यान रहता था। किसी बात को साधारण ढंग से कहे जाने को वह लिखना नहीं कहते थे। वे कोई लेख लिखकर जब तक कई बार उसका परिष्कार और मार्जन नहीं कर लेते थे तबतक छपने नहीं देते थे। ये लिखने में भारतेंदु के उतावलेपन की शिकायत अक्सर किया करते थे।

337. भाषा अनुप्रासमयी और चुहचुहाती हुई होने पर भी उनका पदविन्यास व्यर्थ के आडंबर में नहीं होता था। उनके लेख अर्थगर्भित और सूक्ष्म विचारपूर्ण होते थे लखनऊ की उर्दू का जो आदर्श था वही बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन की हिंदी का था।

338. आनंदकादंबिनी प्रेमघन जी ने अपने ही उमड़ते हुए विचारों और भावों को अंकित करने के लिए निकाली थी। औरों के लेख उनमें नहीं होते थे। भारतेंदु ने एक बार उनसे कहा था कि जनाब यह किताब नहीं कि आप अकेले ही हर काम फरमाया करते हैं, बल्कि अखबार है कि जिसमें अनेक

Gyansindhu Coaching Classes

जनलिखित लेख होना आवश्यक है और यह जरूरत भी नहीं कि सब एक तरह के लिक्खाड़ हों।

339. समालोचना का सूत्रपात हिंदी में एक प्रकार से बालकृष्ण भट्ट और बदरीनारायण चौधरी साहेब ने किया। समालोच्य पुस्तक के विषयों का अच्छी तरह विवेचन करके उसके गुण-दोष के विस्तृत निरूपण की चाल उन्होंने चलायी। बाबू गदाधर सिंह ने बंगविजेता का जो अनुवाद किया था उसकी आलोचना और लाला श्रीनिवास के संयोगिता स्वयंवर की बड़ी विस्तृत और कठोर समालोचना चौधरीजी ने कादंबिनी के 21 पृष्ठो में निकाली।

340. प्रेमघन ने कई नाटक लिखे। भारत सौभाग्य' कांग्रेस के अवसर पर खेले जाने के लिए सन् 1888 ई. में लिखा गया था यह नाटक विलक्षण है। पात्र इतने अधिक है कि अभिनय दुसाध्य और भाषा भी रंगबिरंगी है।

341. कांदबिनी में समाचार तक कभी-कभी बड़ी रंगीन भाषा में लिखे जाते थे। पीछे जो इनका साप्ताहिक पत्र 'नागरी नीरद' निकला उसके शीर्षक भी वर्षा के खासे रूपक हुए। जैसे-संपादकीय सम्मति समीर, हास्यहरितांकुर, नियमनिर्घोष इत्यादि ।

342. भारतेंदु के समसामयिक लेखकों में लाला श्रीनिवास का विशेष स्थान था। वे खड़ीबोली के बोलचाल के शब्द और मुहावरे अच्छे लाते थे।

343. उपर्युक्त चारों लेखकों (भारतेंदु, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रेमघन) में प्रतिभाशालियों का मनमौजीपन था पर लाला श्रीनिवास व्यवहार में दक्ष और संसार का ऊँचा-नीचा समझने वाले पुरुष थे। उनकी भाषा संयत और साफ-सुथरी तथा रचना बहुत कुछ सोद्देश्य होती थी।

Gyansindhu Coaching Classes

344. भारतेंदु के मित्रों में कई बातों में उन्हीं की सी तबियत रखनेवाले मध्यप्रदेश (राघवगढ़) के राजकुमार ठाकुर जगमोहन सिंह हिंदी के एक प्रेमपथिक कवि और माधुर्यपूर्ण गद्य लेखक थे। प्राचीन संस्कृत साहित्य के अभ्यास और विंध्याटवी के रमणीय प्रदेश में निवास करने के कारण विविध भावमयी प्रकृति के रूपमाधुर्य की जैसी सच्ची परख, जैसी सच्ची अनुभूति इनमें भी वैसी उस काल के किसी कवि में नहीं।

345. बाबू हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र आदि कवियों और लेखकों की दृष्टि और हृदय की पहुँच मानव क्षेत्र तक थी। ठाकुर जगमोहन सिंह ने नरक्षेत्र के सौंदर्य को प्रकृति के और क्षेत्रों के सौंदर्य के मेल में देखा है। प्राचीन संस्कृति साहित्य के रुचिसंस्कार के साथ भारतभूमि की प्यारी रूपरेखा को मन में बसानेवाले वे पहले हिंदी लेखक थे।

346. जाति के कायस्थ बाबू तोताराम अलीगढ़ से भारतबंधु पत्र निकालनेवाले 'भाषा संवर्धिनी सभा के संस्थापक होने के साथ-साथ हरिश्चंद्र के लेखकों में थे।.....जब तक रहे हिंदी के प्रचार और उन्नति में रहे।

347.अंबिकादत्त व्यास संस्कृत के प्रतिभाशाली विद्वान, हिंदी के अच्छे कवि और सनातन धर्म के बड़े उत्साही उपदेशक थे। इनके धर्म संबंधी व्याख्यानों की धूम रहा करती थी।

348. इन्होंने (अंबिकादत्त व्यास) बिहारी के पदों को विस्तृत करने के लिए 'बिहारी-विहार नाम का एक बड़ा काव्यग्रंथ लिखा।

349. पं. मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या गिरती दशा में हरिश्चंद्रिका को संभाला था। कविराज श्यामलदान ने जब अपने 'पृथ्वीचरित्र' ग्रंथ में

Gyansindhu Coaching Classes

'पृथ्वीराजरासो' को जाली ठहराया था तब इन्होंने 'रासो संरक्षा' लिखकर उसे असल सिद्ध करने का प्रयत्न किया था।

350. भीमसेन शर्मा (दयानंद के दाहिने हाथ) ने 'आर्यसिद्धांत' नामक एक मासिक पत्र निकाला था। 'संस्कृत भाषा की अद्भुत शक्ति नामक एक लेख लिखकर इन्होंने अरबी-फारसी शब्दों को भी संस्कृत बना डालने की राय बड़ी जोर-शोर से दी थी-जैसे दुश्मन को दु:श्मन, सिफारिश को क्षिप्राशीष।

351. फ्रेडरिक पिंकाट इंग्लैण्ड में बैठे-बैठे हिंदी में लेख और पुस्तकें लिखते और पत्र-व्यवहार करते थे। उनकी.....बालदीपक बिहार के स्कूलों में पढ़ाई जाती थी। इनकी भाषा उनके पत्रों की भाषा की अपेक्षा अधिक मुहावरेदार है।

352.जयशंकर प्रसाद और हरिकृष्ण प्रेमी दोनों की दृष्टि ऐतिहासिक काल की ओर रही है। प्रसाद ने अपना क्षेत्र प्राचीन हिंदूकाल के भीतर चुना और प्रेम जी ने मुसलिम काल के भीतर।

353. प्रसाद के नाटकों में 'स्कंदगुप्त' श्रेष्ठ है और प्रेमी के नाटकों में 'रक्षाबंधन' । हरिकृष्ण प्रेमी के कथोपकथन प्रसाद के कथोपकथनों से अधिक नायकोपयुक्त है।

354. प्रेमी जी के 'रक्षाबंधन' मेवाड़ की महारानी कर्मवती का हुमायूँ को भाई कहकर राखी भेजना.. यह कथावस्तु हिंदू-मुसलिम भेदभाव की शांति सूचित करती है।

355. प्रसाद जी के 'ध्रुवस्वामिनी नाटक में एक संभ्रांत राजकुल की स्त्री का विवाह संबंध मोक्ष सामने लाया गया है जो वर्तमान सामाजिक आंदोलन का अंग है।

Gyansindhu Coaching Classes

356. लक्ष्मीनारायण मिश्र ने अपने नाटकों द्वारा स्त्रियों की स्थिति आदि कुछ सामाजिक प्रश्न तो सामने रखे ही है, यूरोप में प्रवर्तित 'यथा तथ्यवाद का खरा रूप दिखाने का यत्न किया है।

357.नाटक का जो नया स्वरूप लक्ष्मीनारायण जी यूरोप से लाये हैं उसमें काव्यत्व का अवयव भरसक नहीं आने पाया है। उनके नाटकों में न चित्रमय और भावुकता से लदे भाषण हैं, न गीत या कविताएँ। खरी-खरी बात कहने का जोश कहीं-कहीं अवश्य है।

358. ऐतिहासिक नाटक रचना में जो स्थान प्रसाद और हरिकृष्ण प्रेमी का है पौराणिक नाटक रचना में वही स्थान उदयशंकर भट्ट का है।

359. चतुरसेन शास्त्री ने 'अमर राठोर' और 'उत्सर्ग' नामक नाटकों में कथावस्तु को अपने अनुकूल गढ़ने में निपुणता दिखाई है। अंग्रेज़ कवि शैली के ढंग पर सुमित्रानंनदन पंत ने 'ज्योत्सना' नामक एक रूपक लिखा है। कैलाशनाथ भटनागर क

360. 'भीम प्रतिज्ञा' भी विद्यार्थियों के योग्य अच्छा नाटक है।

361. यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी।

362.भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में ही सबसे अधिक संभव है।

363. आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार निबंध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तिगत विशेषता हो।

364. भारतेंदु के समय से ही निबंधों की परंपरा हमारी भाषा में चल पड़ी थी ।

365. द्वितीय उत्थानकाल के आरभ में ही निबंध का रास्ता दिखाने वाले दो अनुवाद ग्रंथ प्रकाशित हुए बेकन विचार रत्नावली' (लार्ड बेकन के कुछ

Gyansindhu Coaching Classes

निबंधों का अनुवाद) और निबंध मालादर्श (चिपलूणकर के मराठी निबंधों का अनुवाद)। पहली पुस्तक पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी की है और दूसरी पं गंगा प्रसाद अग्निहोत्री की।

366. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 1903 ई. में सरस्वती के संपादन का भार लिया. इनके लेखों में अधिकतर 'बातों के संग्रह के रूप में ही है। भाषा के नूतन शक्ति चमत्कार के साथ-साथ नये-नये विचारों की उद्भावना वाले निबंध बहुत कम मिलते हैं स्थायी निबंधों की श्रेणी में दो चार ही लेख जैसे कवि और कविता, प्रतिभा आदि आ सकते हैं।

367. द्विवेदी जी के लेख विचारात्मक श्रेणी में आयेंगे पर इनमें विचार की वह गूढ़ गुम्फित परंपरा नहीं मिलती जिससे पाठक की बुद्धि उत्तेजित होकर किसी नयी विचार पद्धति पर दौड़ पड़े।

368. शुद्ध विचारात्मक निबंधों का चरम उत्कर्ष वही कहा जा सकता है जहाँ एक पैराग्राफ में विचार दबा-दबाकर कसे गये हों और एक-एक वाक्य किसी संबद्ध विचारखंड को लिये हो।

369. द्विवेदी जी के लेखों को पढ़ने से ऐसा जान पड़ता है कि लेखक बहुत मोटी अक्ल के पाठकों के लिए लिख रहा है।

370. द्विवेजी जी की व्यास शैली विपक्षी को कायल करने के प्रयत्न में बड़े काम की है। 'क्या हिंदी नाम की कोई भाषा ही नहीं' (सरस्वती, 1913 ई.) और आर्य समाज का कोप (सरस्वती, 1914) इसके अच्छे उदाहरण है।

371. पं. माधव प्रसाद मिश्र बड़े तेजस्वी, सनातन धर्म समर्थक, भारतीय संस्कृति की रक्षा के सतत् अभिलाषी विद्वान् थे। इनकी लेखनी में बड़ी शक्ति

Gyansindhu Coaching Classes

थी। जो कुछ लिखते थे, बड़े जोश के साथ लिखते थे इसलिए इनकी शैली बड़ी प्रगल्भ होती थी।

372.माधव प्रसाद मिश्र के मार्मिक और ओजस्वी लेखों को जिन्होंने पढा होगा उनके हृदय में उनकी मधुर स्मृति अवश्य बनी होगी उनके निबंध अधिकतर भावात्मक होते थे और धाराशैली पर चलते थे।

373.जहाँ किसी ने कहीं कोई ऐसी बात लिखी जो इन्हें (माधव प्रसाद मिश्र) सनाधन धर्म के संस्कारों के विरुद्ध अथवा प्राचीन ग्रंथकारों के और कवियों के गौरव को कम करने वाली लगी कि इनकी लेखनी चल पड़ती थी। इनके विरोध में तर्क, आवेश, भावुकता सबकुछ का एक अदभुत मिश्रण रहता था। 'वेबर का भ्रम' इसी झोक में लिखा गया था।

374.माधव प्रसाद मिश्र ने महावीर प्रसाद द्विवेदी के 'नैषध चरितचर्या और श्रीधर पाठक के गुनवंत हेमंत (जिसकी द्विवेदी ने बड़ी प्रशंसा की थी) को लगे हाथों लिया था।

375."वेश्योपकारक पत्र का संपादन (गौड़ ब्राह्मण होने के कारण मारवाड़ियों से प्रेम और इनके हितार्थ), तथा देवकीनंदन खत्री की सहायता से काशी से सुदर्शन' नामक मासिक पत्र का 1900 ई. में प्रकाशन इन्होंने किया। सुदर्शन' में इनके लेख प्रायः सब विषयों पर निकलते थे।... लोक सामान्य स्थायी विषयों पर मिश्र जी के 2 लेख मिलते हैं-धृति और क्षमा।

(माधव प्रसाद मिश्र के संबंध में)

376.जोश आने पर माधव प्रसाद मिश्र बड़े शक्तिशाली लेख लिखते थे। समालोचक संपादक प. चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने इसीसे एक बार लिखा था-

Gyansindhu Coaching Classes

"मिश्र जी बिना किसी अभिनिवेश के लिख नहीं सकते। यदि हमें उनसे लेख पाने हैं तो सदा एक-न-एक टंटा उनसे छेड़ ही रक्खा करें।"

377. बालमुकुन्दगुप्त बहुत ही चलते-पुरजे और विनोदशील लेखक थे। अतः कभी छेड़छाड़ कर बैठते थे।... इनकी भाषा बहुत चलती सजीव और विनोदपूर्ण होती थी। किसी प्रकार का विषय हो, गुप्तजी की लेखनी उसपर विनोद का रंग चढ़ा देती थी। वे अपने विचारों को विनोदपूर्ण वर्गों के भीतर ऐसा लपेटकर रखते थे कि उनका आभास बीच-बीच में मिलता था। उनके विनोदपूर्ण वर्णनात्मक विधान के भीतर विचार और भाव लुके-छिपे रहते थे।

378. गद्य के संबंध में इनकी धारणा प्राचीनों के गद्यकाव्य की सी थी। लिखते समय बाण और दंडी इनके ध्यान में रहा करते थे।.... पं. गोविंद नारायण मिश्र के गद्य को सयास अनुप्रास में गुँथे शब्दगुच्छों का एक अटाला समझिए।

379. बाबू श्यामसुंदर दास जैसे हिंदी के अच्छे लेखक हैं वैसे ही बहुत अच्छे वक्ता भी। आपकी भाषा इस विशेषता के लिए प्रसिद्ध है उसमें अरबी फारसी विदेशी शब्द नहीं आते। आधुनिक सभ्यता के विधानों के बीच की लिखा-पढ़ी के ढंग पर हिंदी को ले चलने में आपकी लेखनी ने बहुत कुछ योग दिया है।

380. बाबू श्यामसुंदर साहेब ने बड़ा भारी काम लेखकों के लिए सामग्री प्रस्तुत करने का किया है। हिंदी पुस्तको की खोज के विधान के द्वारा आपने साहित्य का इतिहास, कवियों के चरित और उन पर प्रबंध आदि लिखने का मसाला इकट्ठा करके रख दिया।

381. .....आधुनिक हिंदी के नये-पुराने लेखकों के संक्षिप्त जीवनवृत्त 'हिंदी कोविद रत्नमाला दो भागों में अपने संगृहीत किये हैं। शिक्षोपयोगी तीन पुस्तकें भाषाविज्ञान, हिंदी भाषा और साहित्य तथा साहित्यालोचन भी आपने

Gyanshu Coaching Classes

लिखी या संकलित की है। (बाबू श्यामसुंदर दास के संबंध में)

382.गुलेरी जी एक बहुत ही अनूठी लेखन शैली लेकर साहित्यक्षेत्र में उतरे थे। ऐसा गंभीर और पांडित्यपूर्ण हास जैसा इनके लेखों में रहता है और कहीं देखने में न आया। अनेक गूढ़ शास्त्रीय विषयों तथा कथा प्रसंगा की ओर विनोदपूर्ण संकेत करती हुई उनकी वाणी चलती थी।

383. ....यह बेधड़क कहा जा सकता है कि शैली की जो विशिष्टता और अर्थगर्भित वक्रता गुलेरी जी में मिलती है, किसी में नहीं। इनके स्मित हास की सामग्री विविध क्षेत्रों से ली गई है।

384. अध्यापक पूर्णसिंह में विचारों और भावों को एक अनूठे ढंग से मिश्रित करने वाली एक नयी शैली मिलती है। उनकी लाक्षणिकता हिंदी गद्य साहित्य के लिए एक नई चीज थी। भाषा की बहुत कुछ उड़ान उसकी बहुत कुछ शक्ति लाक्षणिकता में देखी जाती है। भाषा और भाव की एक नई विभूति उन्होंने सामने रखी।

385. यूरोप के जीवन क्षेत्र की अशांति से उत्पन्न आध्यात्मिकता की, किसानों और मजदूरों की महत्त्व भावना की जो लहरें उठीं उनमें वे बहुत दूर तक बहे। उनके निबंध (सरदार पूर्णसिंह) भावात्मक कोटि में ही आयेंगे

386. गुलाबराय की एक छोटी सी पुस्तक है जिसमें कई विषयों पर बहुत छोटे-छोटे अभ्यासपूर्ण निबंध है इन्हीं में एक 'कुरूपता' भी है। समासशैली पर ऐसे विचारात्मक निबंध लिखने वाले, जिनमें बहुत ही चुस्त भाषा के भीतर एक पूरी अर्थपरंपरा कसी हो, अधिक लेखक हमें न मिले।

Gyansindhu Coaching Classes

387.समालोचना के दो प्रधान मार्ग होते हैं-निर्णयात्मक (जुडिशियल मेथड) और व्याख्यात्मक (इंडक्टिव क्रिटिसिज्म)।

388. हिंदी साहित्य में समालोचना पहले-पहल केवल गुण-दोष दर्शन के रूप में प्रकट हुई। लेखों के रूप में इसका सूत्रपात हरिश्चंद्र के समय हुआ था।

389. लेख के रूप में पुस्तकों की विस्तृत समालोचना बदरीनारायण चौधरी ने अपनी 'आनंद कादंबिनी' में शुरू की थी।

390. किसी ग्रंथकार के गुण-दोष दिखलाने के लिए कोई पुस्तक भारतेंदु के समय नहीं निकली थी। इसप्रकार की पहली पुस्तक पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी की हिंदी कालिदास की आलोचना थी। इसमें लाला सीताराम के अनुवाद किये हुए नाटकों की भाषा और भाव संबंधी दोष बड़े विस्तार से दिखाये गये थे। यह अनुवादों की समालोचना थी। इसमें दोषों का उल्लेख था, गुण नहीं ढूँढे गये।

391. इसके उपरांत द्विवेदी जी ने विक्रमांक देव चरितचर्या, नैषधचरितचर्चा और 'कालिदास की निरंकुशता' (विशेषता परिचायक समीक्षाएँ) निकाली। 'कालिदास की निरंकुशता' पुस्तक हिंदी वालों के क्या, संस्कृत वालों के फायदे के लिए लिखी गई थी। इन पुस्तकों को एक मुहल्ले में फैली बातों से दूसरे मुहल्ले वालों को परिचित कराने के प्रयत्न समझना चाहिये, स्वतंत्र समालोचना नहीं।

392.पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी पर एक अच्छी आलोचनात्मक पुस्तक निकाली। आर्यासिप्तशती' और गाथा सप्तशती के बहुत से पद्यों के साथ बिहारी के दोहों का पूरा-पूरा मेल दिखाकर शर्मा जी ने बड़ी विद्वता के साथ एक चली आती

Gyansindhu Coaching Classes

हुई साहित्यिक परम्परा के बीच बिहारी को रखकर दिखाया। हिंदी के दूसरे कवियो के मिलते-जुलते पद्यों की बिहारी की दोहों के साथ तुलना करके शर्मा जी ने तारत्मिक आलोचना का शौक पैदा किया। इस पुस्तक में शर्मा जी ने उस आक्षेपों का बहुत कुछ परिहास किया जो देव को ऊँचा सिद्ध करने के लिए बिहारी पर किये गये थे।

393. देव और बिहारी के झगड़े को लेकर पहली पुस्तक पं. कृष्णबिहारी मिश्र के मैदान में आई। मिश्रबंधुओं की अपेक्षा पं. कृष्णबिहारी मिश्र साहित्यिक आलोचना के कहीं अधिक अधिकारी कहे जा सकते हैं।

394. देव और बिहारी के उत्तर में लाला भगवानदीन ने बिहारी और देव नाम की पुस्तक निकाली जिसमें उन्होंने मिश्रबंधुओं के भद्दे आक्षेपों का उचित शब्दों में जवाब देकर पं. कृष्णबिहारी मिश्र जी बातों पर भी पूरा विचार किया।

395. डॉ. नगेन्द्र की 'सुमित्रानंदन पंत पुस्तक ही ठिकाने की मिली है।

Gyansindhu Coaching Classes